

PROF. BHAGIRATH PRASAD TRIPATHI 'VAGISH SHASTRI'

Prof. Bhagirath Prasad Tripathi (well known as Vagish Shastri) is an international Sanskrit grammarian, eminent linguist, Tantric and yogi.

2. Born on July 24, 1934 at Sagar, Madhya Pradesh, Prof. Tripathi started his teaching career as a lecturer of Sanskrit at Tikmani Sanskrit College, Varanasi in 1959, and soon he became the Director and Professor of the Research Institute at Sampurnanand Sanskrit University Varanasi (1970-1996). He served this prestigious academic post for about three decades. He received his Masters degree, Vyakarana Acharya (1959); Ph-D Vidyavaridhi in Grammar and Historical Linguistics (1964), German Diploma (1966) and D.Litt. Vachaspati (1969) degrees on the Indo-European and Indo-Iranian Study of Paninian Verbs and Semantics.

3. Prof. Tripathi furnished a UGC Project on the Photography of Tantric Manuscripts of Darbar Library, Nepal and a Project of Subject Dictionaries of eighteen Mahapuranas. He also was Chief Editor of the famous Sanskrit journal Sarasvati Sushama for 27 years He has written more than 55 books in Sanskrit, Hindi and English languages in different subjects which included grammatical and philological research work, drama, history, poetry, satire, historical research work and metaphysical writings. He guided more than 40 Research Scholars, both Indian and Foreigner.

4. Prof. Tripathi invented a new technique for the teaching of Sanskrit without the need of painstaking memorization of hundreds of grammatical formulas, named: Vagyoga: Natural Law and Mnemonics. He also developed a new Technique to teach Kundalini Yoga through Shaktipata called “Vagyoga Kundalini Meditation”. He wrote four original books on Paninian Grammar and Linguistics. He refuted the claim of the eminent linguist of America W.D. Whitney in his book: 'Paniniya Dhatupatha-Samiksha'. In the World, this was his first semantical study on the Sanskrit Verbs: Dhatvartha Vijnanam (1980).

5. Prof. Tripathi enriched the satirical Sanskrit literature by the composition of 'Narma Saptashati' consisting of seven hundred shlokas (1984). He enriched the dramatic literature of Sanskrit by the composition of Kṛishakanaam Nagapashaḥ" (1958) a radio one act play. He enriched the story literature of Sanskrit by composing 'Katha Samvartika' (1959). He enriched philosophical Sanskrit Literature by composing 16 hundred Shlokas in Sri Vagyoga-Tantram in 2010. He enriched Sanskrit prose literature by the composition of "Sanskrit Vāṅmaya Manthanam” in 1990 and “Tolstoy Katha-Saptakam” in 1970. He enriched the Shataka literature of Sanskrit by the composition of Atankavada Shatakam (1992) and "Nisarga-sarasanjaliḥ (2013). This poetic work is about Nature. He exposed the Aryan's home by etymological, geographical, historical and comparative study in his book: 'The migration of Aryans from India' (2010) and 'Sanskrit enhanced knowledge of the West' (2010). Gypsy Language and Grammar, 'Why Sanskrit' (2017), 'Shabdaparayanam' (2017), 'Sanjnakriyapadasamshleshika Vyakriya' (2017), 'Samkshipta Saar Vyakaranam' (2017), 'Naad Shabdikam' (2017), 'Antyajon ke prati Hinduvon ka kartavya' (2017) and 'Raag Ratnavali' (2017).

6. Prof. Tripathi founded Vagyoga Chetanapeetham (Yogic Voice Consciousness Institute) Shivala, Varanasi in 1984 where he has been organizing Ganga kavya Sangitika, on the waves of Ganga, Shiva Kavya Sangitika, Guru Kavya Sangitika and Sarasvati Kavya Sangitika time to time for benefit of society. He is Founder member of many Institutes like Swastivachanam Samstha of Delhi, Vishva Sanskrit Pratishthan, Ramnagar fort, Mistiq India, New Delhi, Para Vidya Samsthan, Kolkata etc.

7. Prof. Tripathi got many prestigious awards from all over the world which includes President's Certificate of Honor, Govt. of India 2013, Yash Bharati Samman 2014, Vishva Bharati Samman 2013, Sauhard Samman by U.P. Hindi Sansthan, Lucknow 2014, Akhila Bharatiya Veda Vedanga Award, Rajasthan Sanskrit Academy 1994, Mahakavi Kalidas Sanskrit Vratti Samman 2017, Sanskrit Sadhana Samman 2017, Kalidasa Award, 1966, Mahamahopadhyaya, Shri Kashi Pandit Parishad, Varanasi 1982.Bana Bhatta Puraskara, 1995, Vishishta Puraskara, U.P. Sanskrit Sansthan, 2004. Gold Medal of Honour ABI, USA 1993, A twentieth Century award for achievement Cambridge, England 1998 are some of them.



प्रो. भागीरथ प्रसाद त्रिपाठी 'वागीश शास्त्री'

प्रो. भागीरथ प्रसाद त्रिपाठी 'वागीश शास्त्री' के रूप में सुविख्यात एक जाने माने अंतरराष्ट्रीय संस्कृत व्याकरणविद्, प्रसिद्ध भाषाविद्, तांत्रिक एवं योगी हैं।

2. आपका जन्म 24 जुलाई, 1934 को सागर मध्य प्रदेश में हुआ। आपने अपने शैक्षणिक कॅरियर की शुरूआत वर्ष 1959 में वाराणसी के टीकामणि संस्कृत महाविद्यालय में संस्कृत के प्राध्यापक के रूप में की तथा शीघ्र ही आप संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी में (1970-1996) अनुसंधान संस्थान के निदेशक एवं प्रोफेसर बन गए। आपने लगभग तीन दशक तक इस प्रतिष्ठित शैक्षणिक पद पर सेवा की। आपने व्याकरण आचार्य में मास्टर्स डिग्री (1959); व्याकरण तथा ऐतिहासिक भाषा विज्ञान में पी एच डी विद्यावृद्धि (1964), जर्मन भाषा में डिप्लोमा (1966) तथा पाणिनी के धातु रूपों तथा उनके अर्थ विज्ञान के भारत-यूरोपीय तथा भारत-ईरानी अध्ययन संबंधी डी. लिट वाचस्पति (1969) की उपाधि प्राप्त की है।

3. आपने दरबार लाइब्रेरी नेपाल की तांत्रिक पाण्डुलिपियों की फोटोग्राफी तथा अट्ठारह महापुराणों के विषयक शब्दकोष पर एक यूजीसी प्रोजेक्ट प्रस्तुत किया। आपने 27 वर्षों तक सुप्रसिद्ध संस्कृत पत्रिका ''सरस्वती सुषमा'' के मुख्य संपादक के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान की हैं। आपने व्याकरण तथा दार्शनिक अनुसंधान कार्यों, ड्रामा, इतिहास, कविता, व्यंग्य, ऐतिहासिक अनुसंधान कार्य तथा तत्वमीमांसा लेखों सहित विभिन्न विषयों पर संस्कृत हिंदी तथा अंग्रेजी भाषाओं में 55 से भी अधिक पुस्तकों की रचना की है। आपने 40 भारतीय तथा विदेशी रिसर्च स्कॉलर्स का मार्गदर्शन किया है।

4. आपने वाग्योग: प्राकृतिक नियम एवं स्मृति विषय से संबंधित असंख्य वैयाकरणिक सिद्धांतों को दुरुह तरीके से याद करने की आवश्यकता के बिना ही संस्कृत पढ़ाने की एक नई तकनीकी की खोज की। आपने ''वागयोग कुंडलिनी मेडिटेशन'' कही जाने वाली शक्तिपात विद्या के माध्यम से कुंडलिनी योग को सिखाने की नई तकनीक भी विकसित की। आपने पाणिनी की व्याकरण एवं भाषा विज्ञान संबंधी चार मूल पुस्तकों की रचना की। आपने अपनी पुस्तक ''पाणिनिया धातुपथ-समीक्षा'' में अमेरिका के सुप्रसिद्ध भाषाविद् डब्ल्यू डी व्हाइटनी के दावों का खंडन किया। विश्व में संस्कृत धातु रूपों धातुर्थ विजनानम (1980) संबंधी यह उनका प्रथम क्रमबद्ध अध्ययन था।

5. आपने सात सौ श्लोकों वाले 'नरमा सपतशती' (1984) की रचना करके संस्कृत साहित्य में व्यंग्य को और अधिक प्रभावपूर्ण बनाने में अहम भूमिका निभाई है। आपने ''कृषाकानाम नागापाशाह'' (1958) नामक रेडियो एकांकी की रचना करके संस्कृत में नाट्यकला साहित्य को और अधिक समृद्ध बनाया। आपने 'कथा संवितर्का' (1959) की रचना करके संस्कृत कथा साहित्य को समृद्ध बनाया। आपने वर्ष 2010 में वाग्योग तंत्रम में 1600 श्लोकों की रचना करके दार्शनिक संस्कृत साहित्य को और अधिक सम्पन्न बनाने में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आपने वर्ष 1990 में ''संस्कृत वाड्मय मंथानम'' तथा वर्ष 1970 में ''टॉलस्टॉय कथा-सप्तकाम'' की रचना करके संस्कृत गद्य साहित्य के अलंकरण में मुख्य भूमिका निभाई। आपने अतंकवादा शतकम (1992) तथा ''निसर्ग'-सारसांजलि 2013'' की रचना करके संस्कृत के शतक साहित्य को और अधिक संवर्धित किया। आपकी कविताएं प्रकृति से जुड़ी हैं। आपने अपनी पुस्तक ''द माइग्रेशन ऑफ आर्यन फ्रॉम इंडिया'' (2010) तथा 'संस्कृत एनहांस्ड नॉलेज ऑफ द वेस्ट' (2010) में व्युतपत्ति-विषयक, भौगोलिक, ऐतिहासिक एवं तुलनात्मक अध्ययन द्वारा आर्यों के निवास स्थान के संबंध में जानकारी प्रदान की। आपने जिप्सी लैंग्वेज एंड ग्रैमर' 'वाए संस्कृत' (2007), 'शब्दप्रणायाम' (2017), 'संजनाक्रियापदासंश्लेषिका व्याक्रिया' (2017), 'संक्षिप्त सार व्याकरण ' (2017), 'नाद शब्दीकम' (2017), 'अंत्यजों के प्रति हिंदुओं का कर्तव्य' (2017), 'राग रत्नावली' (2017) की भी रचना करके संस्कृत साहित्य को और अधिक समृद्ध बनाने में अपना अहम योगदान दिया है।

6. आपको वर्ष 1984 में शिवाला, वाराणसी में वाग्योग चेतनापीठम, (यौगिक वॉइस कांशियसनेस इंस्टीटयूट) की स्थापना का श्रेय प्राप्त है जहां आप समय-समय पर गंगा की लहरों पर गंगा काव्य संगीतिका, शिव काव्य संगीतिका, गुरु काव्य संगीतिका तथा सरस्वती काव्य संगीतिका का आयोजन करते रहते हैं। आपको दिल्ली की स्वस्तिवाचन संस्था; विश्व संस्कृत प्रतिष्ठानम, रामनगर फोर्ट, मिस्टिक इंडिया, नई दिल्ली, परा-विद्या संस्थान, कोलकाता इत्यादि जैसे अनेक संस्थानों के संस्थापक सदस्य होने का भी गौरव प्राप्त है।

7. आपको विश्वभर के असंख्य प्रतिष्ठित पुरस्कारों से विभूषित किया गया है जिसमें भारत सरकार द्वारा वर्ष 2013 में प्रदत्त प्रेजीडेंट सर्टिफिकेट ऑफ ऑनर, यश भारतीय सम्मान 2014, विश्व भारती सम्मान, 2013; उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा प्रदत्त सौहार्द सम्मान (2014); राजस्थान संस्कृत अकादमी द्वारा 1994 में दिया गया अखिल भारतीय वेद-वेदांग पुरस्कार, महाकवि कालीदास संस्कृत वृत्ति सम्मान, 2017; संस्कृत साधना सम्मान, 2017; कालीदास पुरस्कार, 1966; महामहोपाध्याय श्री काशी पंडित परिषद, वाराणसी 1982; बाणभट्ट पुरस्कार, 1995; उत्तर प्रदेश संस्कृत संगठन द्वारा 2004 में प्रदत्त विशिष्ट पुरस्कार; गोल्ड मेडल ऑफ ऑनर ए बी आई, यू एस ए, 1993; कैंब्रिज इंग्लैंड द्वारा 1998 में प्रदत्त ए टवंटीएथ सेंचुरी अवार्ड ऑफ अचीवमेंट शामिल हैं।